एस. एस. कॉलेज जहानाबाद
हिन्दी विभाग
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
कक्षा पार्ट-एथ
समय - 11. बजे से 12.00, 28.5.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - 'चन्द्रगुप्त' नाटक के स्त्री पात्र

छात्र-छात्राओं !

उपर्युक्त नाटक के स्त्री पात्रों की कुल संख्या आठ है जिनमें अलका तक्षशिला की राजकुमारी है तो कल्याणी मगध की राजकुमारी एवं मालविका सिंधु-देश की राजकुमारी है। कार्नेलिया यवन सेनापति सिल्युकस की कन्या है। सुवासिनी शकटार की कन्या है, जिसका प्रेम मगध के आमात्य राक्षस से है। नीला-लीला कल्याणी की सहेलियाँ हैं तो एलिस कार्नेलिया की सहेली है। मौर्य-पत्नी चन्द्रगुप्त की माता है। इस प्रकार स्त्री पात्रों के संबंध दर्शक के लिए आसानी से बोधगम्य हैं।

चारित्रिक विकास की दृष्टि से गांधार नरेश की बेटी एवं तक्षशिला की राजकुमारी अलका का चरित्र प्रारम्भ में ही स्पष्ट हो जाता है। गुरुकुल में उसने जिसप्रकार चन्द्रगुप्त और सिंहरण की बातें सुनी उससे बहुत प्रभावित हुई है। देश-भक्ति युक्त बातों के प्रभाव में आकर उसने अपने ही पिता गांधार नरेश और भाई आम्भीक के देश-द्रोह से संबंधित मनसूबों को समझकर उनसे अपने को अलग कर लिया। जबकि वे दोनों यवन आक्रान्ताओं से मैत्री का प्रस्ताव रखते हैं। अलका चतुर भी है। प्रथम अंक के दसवें दृश्य में जंगल में उसका सामना सिकन्दर के सेनापति सिल्युकस से हो जाता है। सिल्युकस शिकारी के वेश में है उसने अलका से कहा- तुम कहाँ सुन्दरी? अलका कहती है —
'मेरा देश है मेरे पहाड़ हैं मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल हैं। इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं के बने हैं।' इन बातों में उलझाकर एकाएक सामने दिखाकर 'देखो सिंह आ रहा है' कहकर सिल्युकस का ध्यान बँटाकर भाग जाती है।

इस रूप में अलका नाटकीय दृष्टि से भी अत्यंत जीवन्त पात्र बन जाती है। अलका का कथन और कर्म(एक्शन) दोनों एक जगह एक साथ मिलकर अपने मंतव्य भी उजागर करते हैं और दुश्मन के सामने कौशल भी उपस्थित कर चकित कर देते हैं। यहां पाश्चात्य नाट्य-शिल्प का संकलनत्रय स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अलका सिंहरण के वीरोचित देश-भक्ति पर मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगती है। जीवन की प्रत्येक स्थिति में उसका साथ देती है - पर्वतेश्वर के यहाँ बन्दी बनकर चाणक्य नीति से परिचालित होकर उसने किस कौशल से सिंहरण को छुड़ाया और एक क्षण के लिए 'प्रेम का स्वांग रचकर उसके चंगुल से जिसतरह अपने को बचाया है वह उसकी व्यावहारिक बुद्धि का भी परिचायक है। युद्ध में यवनों की रक्षा भी वह सेवा-भावना से करती है। दो यवनों को बाण से मारती भी है। इसप्रकार अलका के चरित्रांकन में नाटककार को अतीव सफलता मिलती है- कहीं 'उलझी हुई नहीं' बिलकुल साफ देशभक्त वीरांगना अलका अपने कौशल से अंत में भारे आम्भीक को भी अनुकूल बना लेती है। इसके चरित्रांकन की विविधता में नाटकोचित गति दिखलाई पड़ती है।

सुवासिनी भी अलकाकी तरह विविधता और कौशलवाली पात्रा है। वह राक्षस से प्रेम करती है और नंद के विलास कानन की रानी बनी हुई है इसके बावजूद अपने कौशल से न तो नंद की भोग्या बनती है और न पिता की आज्ञा के बिना राक्षस से विवाह करती है। अपने किसी कृत्य से उसने अपने कारागार में बंदी बूढ़े बाप का सिर नीचा न होने दिया। जबकि बाद में वह नंद के अभिनयशाला की रानी भी बनती है। इस चरित्र में भी नाटककार ने नाटक के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका के सृजन में सफलता हासिल की है। खासकर उस हालात में जब राक्षस को मगध के राजसिंहासन के करीब से अलग करने में चाणक्य की कूट-योजनानुसार वह दूती बनकर कार्नेलिया के यहाँ प्रेम की व्याख्या किस तरह करती है जिससे कार्नेलिया और चन्द्रगुप्त के बीच की सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। राक्षस और चाणक्य के प्रसंग को लेकर उसकी समस्या का भी समाधान हो जाता है। इस प्रकार इसके चरित्रांकन में भी उतार-चढ़ाव है जो नाटकोचित है।

कल्याणी के चरित्र में उतार चढ़ाव तो नहीं है पर वह सपाट भी नहीं है। इसमें आत्म सम्मान, स्वावलम्बन एवं दृढ़ता का गुण स्पष्टतः दीखता है। कभी मगध नरेश नंद ने कल्याणी से विवाह के लिए पर्वतेश्वर के यहाँ प्रस्ताव भेजा था जिसे पर्वतेश्वर ने ठुकरा दिया था। इसी प्रतिशोध में वह पर्वतेश्वर की हत्या कर देती है, लेकिन इस हत्या में उसके कुल की संरक्षा और आत्मसम्मान का भाव ही अधिक है। अपने पिता के विलासी जीवन का भी वह समर्थक नहीं थी। ~~इसके आगे~~ उसके पहले सिकन्दर से पर्वतेश्वर के युद्ध में पर्वतेश्वर की प्राण-रक्षा करके अपनी वीरता की धाक जमाना ही उसका लक्ष्य था जिसे वह सिद्ध कर लेती है। बाल्य-काल की मैत्री के आधार पर स्नातक होकर राज्य में लौटे चन्द्रगुप्त से उसमें प्रेम-भाव उत्पन्न होता है। वह चन्द्रगुप्त से कहती है— 'मुझे-भूले न होगे।' इस भाषा में प्रेम प्रतिध्वनित होता है। अंतिम युद्ध में भी इस आशा से मगध की एक टुकड़ी लेकर जाती है कि चन्द्रगुप्त तो जरूर युद्ध में होगा, और अपनी सैन्य टुकड़ी भी चन्द्रगुप्त के हवाले कर देती है। यहाँ तक उसमें राष्ट्र के प्रति संचेतना, आत्मसम्मान, कुल की संरक्षा दिखायी देती है, पर जैसे ही नंद की हत्या चन्द्रगुप्त द्वारा किये जाने का भाव उत्पन्न होता है वह निराशा में डूब जाती है। चन्द्रगुप्त से उसका प्रेम भी तिरोहित हो जाता है। पर्वतेश्वर की हत्या करने बाद वह चन्द्रगुप्त से स्पष्ट कहती है— "मौर्य! कल्याणी ने वरण किया था केवल एक पुरुष को, वह था चन्द्रगुप्त। परन्तु तुम मेरे पिता के विरोधी हुए। अब मेरे लिए कुछ भी अवशिष्ट नहीं रहा।' इतना कहकर दृढ़ आत्मसम्मान की वह प्रतिमा अपनी आत्महत्या कर लेती है।

मालविका और कार्नेलिया का चरित्रांकन भी महत्वपूर्ण है। इसे अगली कक्षा में विवेचित किया जायेगा।

(शेष अभी)